मुंबई, नवी मुंबई, ठाणे, पालघर, रायगढ़, नासिक, पुणे से एक साथ प्रकाशित

दो बजे दोपहर

Website : www.dobajedopahar.in

पत्रकारिता पावर नहीं रिस्पांसिबिलिटी है

स्वरा भास्कर छुपाकर रखती हैं अपनी बच्ची का

पेज 7 देखें

नरक बहुत देर से देखा गया सत्य है - थॉमस हॉब्स

पेज 4 देखें

वर्ष : 32 • अंक : 166 • पृष्ठ : 8 • मुंबई, सोमवार, 4 दिसंबर 2023 • RNI: MAHHIN/49994/91 • मूल्य 3 रुपए • epaper.dobajedopahar.com • संपादक : अरुण लाल

● तीन राज्यों में भाजपा को प्रचंड बहुमत ● कांग्रेस के 'पंजे' ने केसीआर से छीनी जीत

PM बोले- जहां दूसरों से उम्मीद खत्म; वहां से मोदी की गारंटी शुरू

राजस्थान कुल सीटें 199	पार्टी	सीटें
	भाजपा	115
	कांग्रेस	69
	अन्य	15

बहुमत का आंकड़ा 100

मध्य प्रदेश कुल सीटें 230	पार्टी	सीटें
	भाजपा	164
	कांग्रेस	65
	अन्य	01

बहुमत का आंकड़ा 116

छत्तीसगढ़ कुल सीटें 90	पार्टी	सीटें
	भाजपा	54
	कांग्रेस	35
	अन्य	01

तेलंगाना कुल सीटें 119	पार्टी	सीटें
	कांग्रेस	64
	बी.आर.एस.	39
	भाजपा	08
	अन्य	08

मोदी मैजिक

एजेंसी । नई दिल्ली

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में रविवार को कांग्रेस को करारी शिकस्त देकर हिंदी भाषी राज्यों में अपनी पकड़ मजबूत कर ली। राजस्थान में रिवाज बना रहा। अशोक गहलोत का जादू वोटरों पर काम नहीं कर पाया। यहां भाजपा ने बिना सीएम की घोषणा के चुनाव लड़ा और तमाम आलोचनाओं, आशंकाओं को दरकिनार करते हुए बड़ी जीत हासिल की। मध्य प्रदेश के वोटरों ने पूरे देश को चौंका दिया है। जितनी बड़ी जीत भाजपा हासिल कर रही है, उसकी उम्मीद तो शायद खुद पार्टी ने भी नहीं की थी। छत्तीसगढ़ के नतीजे कांग्रेस से ज्यादा भाजपा के लिए चौंकाने वाले रहे हैं। यहां अपनी जीत को लेकर कांग्रेस जितना सुनिश्चित थी, भाजपा को उतना ही भरोसा मोदी और अमित शाह के दौरों पर था। वहीं तेलंगाना ने कांग्रेस को बड़ी राहत दी है।

इन्होने ये कहा

आज की हैट्रिक (राजस्थान, मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़) ने 24 (2024 के लोकसभा चुनाव) की हैट्रिक की गारंटी दे दी है। उन्होंने कहा कि इन चुनाव नतीजों की गूंज पूरी दुनिया में सुनाई देगी।

-नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

जनता के दिल में सिर्फ और सिर्फ मोदी जी हैं। आज के चुनाव परिणामों ने यह साबित कर दिया है कि तुष्टीकरण और जाति में बाँटने की राजनीति के दिन समाप्त हो चुके हैं।

-अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और राजस्थान का जनादेश हम विनम्रतापूर्वक स्वीकार करते हैं, लेकिन विचारधारा की लड़ाई जारी रहेगी। तेलंगाना के लोगों को मेरा बहुत धन्यवाद - प्रजालु तेलंगाना बनाने का वादा हम ज़रूर पूरा करेंगे। सभी कार्यकर्ताओं को उनकी मेहनत और समर्थन के लिए दिल से शुक्रिया।

-राहुल गांधी, कांग्रेस नेता

राजस्थान

गहलोत की गारंटी पर भारी पड़ा BJP का हिंदुत्व कार्ड

- राज्य की सत्ताधारी कांग्रेस चुनाव से पहले अपनी गारंटियों के लिए मुखर थी। इसने 500 रुपये के किफायती दाम में सिलेंडर, चिरंजीवी योजना में इलाज, महिलाओं के लिए मुफ्त मोबाइल को अपने प्रचार का हिस्सा बनाया। वहीं, पलटवार में भाजपा ने जहां केंद्र सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को सामने रखा तो वहीं साथ में ध्रुवीकरण को भी साधने का काम किया। इसी कड़ी में सबसे पहले भाजपा ने साधु-संतों को चुनाव मैदान में उतारकर हिंदुत्व कार्ड खेला। दिलचस्प तो यह भी है कि जिन सीटों पर साधु संत उतरे वहां पोलिंग अच्छी हुई।
- राजस्थान में कांग्रेस की हार की एक बड़ी वजह पार्टी की आपसी कलह रही। कई नेता नाराज हुए, लेकिन गहलोत ने उन्हें सही तरीके से हैंडल नहीं किया। पार्टी के अंदर गुटबाजी और कई बागी नेताओं ने पार्टी का खेल बिगाड़ा। यहां तक कि कई नेताओं ने निर्दलीय चुनाव लड़ा तो कुछ को बीजेपी ने अपने पाले में कर लिया।
- राजस्थान में कांग्रेस की हार की वजह सीएम अशोक गहलोत का अहंकार भी रहा, उनका अति आत्म विश्वास और अहंकार उन्हें ले डूबा। गहलोत के साथियों ने उनपर अहंकारी होने का आरोप लगाया। खुद उनकी पार्टी के कई विधायकों ने अपनी बात न सुनने का आरोप लगाया, वहीं सचिन पायलट से उनकी लड़ाई तो पिछले साल सरकार बनने के बाद से ही चल रही है। कई बार मीडिया के सामने आकर गहलोत ने सचिन पायलट को निकम्मा और गद्दार तक कह दिया।
- राजस्थान में भर्ती परीक्षाओं का पेपर लीक मामला गहलोत सरकार पर भारी पड़ा, बीजेपी ने चुनाव के दौरान इस मुद्दे को लेकर कांग्रेस को खूब घेरा। पेपर लीक को लेकर गहलोत को युवाओं के गुस्से का शिकार होना पड़ा। पिछले पांच साल के गहलोत कार्यकाल में कई परीक्षाओं के पेपर लीक के मामले सामने आए, जिसको लेकर बीजेपी ने गहलोत पर एक्शन ना लेने का आरोप भी लगाया। ये मुद्दा गहलोत सरकार के लिए भारी पड़ा।

मध्यप्रदेश

मामा का लाड़ली बहनों को दुलार और इमोशनल कार्ड

- शिवराज सिंह चौहान की लाड़ली बहन योजना चुनाव में गेम चेंजर साबित हुई। इस बंपर जीत के पीछे महिला वोटरों की भूमिका बेहद अहम मानी जा रही है। शिवराज की वापसी में सबसे अहम रोल लाड़ली बहन योजना ने निभाया। इस योजना ने चौहान की राजनीतिक किस्मत बदल कर रख दी है। लाड़ली बहना योजना के तहत मध्यप्रदेश की 1।31 करोड़ महिलाओं को 1250 रुपये हर महीने दिये जा रहे हैं। एमपी की 7 करोड़ आबादी में लाड़ली बहना योजना की लाभार्थियों ने शिवराज को भर भर कर वोट दिया है। महिलाओं और लड़कियों के लिए शिवराज का नाम एक भरोसा था, इस पर उन्होंने यकीन किया।
- इस चुनाव में भाजपा ने मध्यप्रदेश में शिवराज को बतौर सीएम उम्मीदवार नहीं उतारा। चुनाव प्रचार के दौरान इस बात के कयास लगाये जा रहे हैं कि अगर एमपी में भाजपा जीतती भी है, तो शिवराज सीएम नहीं बनेंगे। इससे ये संदेश गया कि शिवराज की स्थिति कमजोर है। लेकिन इस मुद्दे पर शिवराज इमोशनल कार्ड खेल गए। शिवराज ने प्रचार के दौरान साफ साफ मतदाताओं-महिलाओं से पूछा कि क्या आप नहीं चाहते हैं कि आपका मामा, आपका भाई मुख्यमंत्री बने? शिवराज के इस सवाल पर वोटर्स ने भारी शोर के साथ उनके पक्ष में जवाब दिया।
- मध्यप्रदेश में संघ और हिंदुत्व की जड़ें काफी गहरी हैं। यही वजह है कि कथित सेकुलर कांग्रेस को भी एमपी में सॉफ्ट हिंदुत्व के सहारे चलना पड़ा। लेकिन मतदाताओं को जब चुनने की जरूरत हुई, तो उन्होंने भाजपा के ब्रांड वाले हिंदुत्व को चुना। शिवराज से लेकर अमित शाह और योगी आदित्यनाथ सहित भाजपा के तमाम दिग्गज नेताओं ने हिंदुत्व का एजेंडा सेट किया।

तेलंगाना

पेपर लीक से लेकर किसानों तक कांग्रेस ने रोका केसीआर का विजयरथ

मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के साथ तेलंगाना की तस्वीर अब स्पष्ट हो गई है। यहां विधानसभा चुनाव में सत्ताधारी भारत राष्ट्र समिति यानी बीआरएस को पछाड़कर कांग्रेस आगे चली गई है। 119 सदस्यीय विधानसभा में कांग्रेस 60 सीटों के जादुई आंकड़े को पार कर गई है और सरकार बनाने जा रही है। ऐसे में लोगों के मन में सवाल भी उठ रहे हैं कि आखिर वो कौन से मुद्दे थे, जो बीआरएस के लिए भारी पड़ गए? आइये जानते हैं पांच बड़े मुद्दे...

- कांग्रेस ने सत्ता विरोधी लहर का फायदा उठाया
- बेरोजगारी के मुद्दे से युवाओं का मोह टूटा
- योजनाओं में अनियमितता से टूटा लोगों का भरोसा
- कर्नाटक के बाद तेलंगाना में काम आईं कांग्रेस की गारंटियां
- योजनाबद्ध तरीके से चुनाव लड़ी कांग्रेस

छत्तीसगढ़

कांग्रेस आखिर क्यों हुई धड़ाम

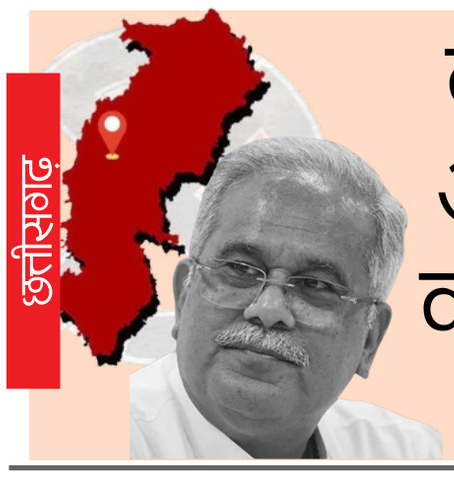

- इस बार कांग्रेस ओबीसी की अलग-अलग जातियों का समीकरण बैठाने में सफल नहीं रही। साहू समाज का एक बड़ा वोट बैंक जिसने 2018 के चुनावों में कांग्रेस को वोट किया था इस बार उससे छिटका दिखा।
- सत्ता में रही पार्टी जब चुनाव में उतरती है तो उसके साथ सरकार और संगठन दोनों होते हैं। छत्तीसगढ़ के चुनावों में लोगों की कुछ नाराजगी सरकार के साथ थी लेकिन बड़ा नुकसान संगठन के सक्रिय ना होने की वजह से हुआ।
- कांग्रेस अपनी सफाई में कुछ भी कहती रहे। कोर्ट में क्या साबित हो पाए या नहीं या वक्त बताएगा लेकिन कांग्रेस सरकार के ऊपर भष्ट्राचार के आरोप एक तरह से नत्थी हो गए। ऐन चुनाव के वक्त महादेव ऐप के प्रकरण ने भी इस धारणा की पुष्टि की।
- बीते पांच सालों में भूपेश सरकार का मुख्य फोकस छत्तीसगढ़ी संस्कृति और किसान रहे हैं। कांग्रेस शहरी क्षेत्रों के विकास कार्यों से दूर रही है। बरुण सखाजी कहते हैं कि निर्माण के स्तर पर कांग्रेस सरकार ने ऐसा कुछ भी नहीं किया जिसे बताया या दिखाया जा सके।
- कांग्रेस सरकार खेमों में बंटी नजर आई। मुक्तिबोध कहते हैं कि टीएस सिंह देव और भूपेश बघेल के बीच में खटपट है यह बात कोई सीक्रेट नहीं थी। ढाई-ढाई साल मुख्यमंत्री पद को लेकर शुरू हुआ विवाद आखिरी के दो साल तक सरकार को दो गुटों में स्पष्ट रुप से बांट चुका था। टीएस और भूपेश में नहीं बनती यह बात कांग्रेस में जगजाहिर थी।